भारतीय वाङ्मय में ऊर्जा की अवधारणा

वैशाली जैन
अनुसंधात्री, पीएच.डी.
मोनाड विश्वविद्यालय, हापुड़,

यद्यपि भारतीय दार्शनिक वाड्मय अत्यन्त विशाल और समृद्ध है,किन्तु उसमें ऊर्जाका सीधे–सीधे और स्पष्ट रूप से नाम नहीं आया है। भारतीय दार्शनिक वाड्मय में मुख्यतः नौ दर्शनों का समाहार किया गया है, जिनमें तीन दर्शन– जैन, बौद्ध और चार्वाक तो ''वेदनिन्दको नास्तिकः'' इस परिभाषा के आधार पर नास्तिक कहे गये हैं और शेष षट् दर्शनों को आस्तिक बताया गया है।

निष्पक्ष और तटस्थ दृष्टि से विचार करें तो यह परिभाषा ही युक्त नहीं है, क्योंकि यह परिभाषा एकांगी है और किसी एक पक्ष का समर्थन करने वाली है। यदि इसी परिभाषा को हम दूसरे पक्ष की ओर धकेल दतो शायद स्थिति ही बदल जायेगी, यथा– ''तत्वार्थसूत्रनिन्दको नास्तिकः''।[1] परिभाषा बनाने वाला यदि अपने किसी ग्रन्थ को केन्द्र में रखकर कहे कि इसको न मानने वाला मिथ्यादृष्टि या नास्तिक तो शायद यह एकांगी ही परिभाषा होगी। इसमें निष्पक्षता का अभाव है।

इस नूतन परिभाषा के आधार पर अन्य दर्शन नास्तिक हो जायेंगे। अतः इस प्रकार की एकांगी परिभाषा बनाना ही ठीक नहीं है। वास्तव में देखा जाये तो जो दर्शन लोक–परलोक, पाप–पुण्य आदि को नहीं मानता है, वही वास्तव में नास्तिक कहा जाना चाहिए, इस दृष्टि से अकेला चार्वाक ही नास्तिक कहा जा सकेगा।

दूसरा दृष्टिकोण यहभी है कि ''वदनिन्दको नास्तिकः'' इस परिभाषा के आधार पर भी जैनदर्शन को नास्तिक कहना पूरी तरह से झूठा है, क्योंकि वेदों के अन्तर्गत जैनदर्शन के चौबीस तीर्थंकरों में से प्रथम तीर्थंकर ऋषभदेव और बाईसवें तीर्थंकर अरिष्टनेमि का अत्यन्त ही बहुमान के साथ बारम्बार स्मरण किया गया है। जब वेदों में जैन तीर्थंकरों का नाम आया है तो जैन दर्शन को उक्त परिभाषा के आधार पर नास्तिक कैसे कहा जा सकता है?

तीसरा दृष्टिकोण यह भी सिद्ध होता है कि जैनदर्शन के तीर्थंकरों का उल्लेख वेदों में होने से यह तो सुनिश्चित होता है कि वदों के उत्पत्ति के पूर्व भी जैनदर्शन रहा था। और भी खास बात यह कि जैनदर्शन की प्राचीनता का अनुमान भी इससे होता है कि जब बाईसवें तीर्थंकर अरिष्टनेमि का उल्लेख वेदों में होने से यह तो सिद्ध है कि इसके पूर्व 21 तीर्थंकर हो चुके थे। अतः जिन वेदों को अपौरुपेष कहा जाता है, उनके पूर्व तो जैनदर्शन के 21 तीर्थंकर हो चुके हैं, अतः जैनदर्शन आस्तिक होने के साथ–साथ प्राचीन भी है।

[1]तत्वार्थसूत्र एक जैन ग्रन्थ है।

जैनदर्शन का ऊर्जा के प्रति दृश्टिकोण

जैन वाङ्मय बहुत विशाल है और उसमें ऊर्जा की चर्चा यत्र–तत्र दृष्टिगोचर होती है। जैनाचार्यों ने जीव और अजीव दो प्रकार के द्रव्यों की कल्पना की है और दोनों ही द्रव्यों को अनन्त शक्ति सम्पन्न पारिभाषित किया ळें उनके अनुसार ये दो प्रकार के पदार्थ जो संख्या में अनंतानंत हैं, वे पूर्ण स्वाधीन–स्वतंत्र एवं अपने–अपने कार्यों को संचालित करने में स्वयं समथ है, इससे सिद्ध होता है कि उनमें अपनी अद्भुत ऊर्जा निहित रहती है जो उन्हें कभी पराधीन नहीं होने देती।

जैनाचार्यों ने मन्त्रों का महान आविष्कार किया है और उनसे नाना प्रकार के लाभ होने की बात कही है। इससे भी सिद्ध होता है कि जैन मंत्र विज्ञान में ऊर्जा के अक्षय स्त्रोत अनंतानंत हैं। उन्होंने भूगोल–खगोल का वर्णन करते हुए असंख्य ग्रह–सूर्य–चन्द्र–तारे आदि का निरूपण किया है। निःसंदेह ये सब भी ऊर्जा के ही स्त्रोत हैं।

इसी प्रकार 'समयसार' (आचार्य कुन्दकुन्द द्वारा रचित) आदि ग्रन्थों में आत्मा को अनंत शक्ति संपन्न चिंतामणि कहा है। यह उनके आध्यात्मिक ऊर्जा के प्रतिपादन का अनूठा तरीका है। जैनाचार्यों ने पुदगल परमणु को एक समय में (एक सैकेंड का असंख्यातवा भाग) 14 राजू[2] तक गमन करने की बात की है (आकाश से पाताल तक) इससे सिद्ध होता है कि परमाणु भी उनकी दृष्टि में अनन्त ऊर्जा से संपन्न ह। दो परमाणुओं का बंधन कब–कैसे होता है और कब–कैसे नहीं होता है – इसका भी 'तत्वार्थसूत्र'[3] (आचार्य उमास्वामी) आदि ग्रन्थों में विस्तृत निरूपण पाया जाता है। यह सब पौद्गलिक ऊर्जा का ही निरूपण समझा जाना चाहिए जिसमें ऊर्जा का ह्रास होता है अर्थात् बन्धन से ऊर्जा कम हो रही है।

जैन वाङ्मय में जैनाचार्यों ने ऊर्जा को विस्तृत रूप से दर्शाया है। प्रत्येक अणु में ऊर्जा का एक वृहद् स्त्रोत छिपा हुआ है, जो अनंत शक्तियों से सम्पन्न है। वैज्ञानिक अभी तक उसका एक सूक्ष्म भाग ही खोज पाये हैं। वे किसी भी कार्यकता के कार्य करने को क्षमता को ऊर्जा (शक्ति) कहते हैं।

जैन आचार्यों का कहना है कि जब एक पुद्गल परमाणु में ऊर्जा का अनंत स्त्रोत है तब जीवात्मा में, जो उससे अनंतानंत गुणी व शक्तिशाली, उसमें ऊर्जा का कितना संग्रह होगा? इसकी हम कल्पना भी नहीं कर सकते। जैनाचार्यों ने इसका अनुभव किया है और जैन दर्शन में इसे दर्शाया भी गया है। परन्तु इस विषय पर शोध कार्य नहीं हो पाया है।

विज्ञान और दर्शन का समन्वय

प्रायः कहा जाता है कि विज्ञान में आत्मा के अस्तित्व की स्वीकृति नहीं है। यह सच है कि आत्मा के आध्यात्मिक भाव के प्रति विज्ञान उदासीन है परंतु विज्ञान में चेतना की स्वीकृति है। विद्युत् चुम्बकीय ऊर्जा में ज्ञान प्राप्ति, कार्य क्षमता और कार्य नियंत्रण की क्षमता है।

[2]दूरी विषयक एक माप जिसका अनुमान लगाना भी अत्यन्त दुष्कर है।
[3]इसके लिए तत्वार्थसूत्र, आचार्य उमास्वामी, पंचम अध्याय द्रष्टव्य है।

जैनागमों में इस क्षमता को ज्ञानोपयोग और दर्शनोपयोग अथवा आत्मा का उपयोग गुण कहा है। बायो मालेक्यूल अथवा विस्रसा स्कन्धों में विद्युत– चुम्बकीय ऊर्जा क्षेत्र की प्रतीति अथवा चेतना के रूप में होती है।

यद्यपि आत्मा Soul अथवा Spirit जैसे शब्द विज्ञान में स्वीकृत नहीं है तथापि इनके कार्यों का विवेचन 'फॉटोन–फोनॉन' इंटरएक्शन के रूप में होता है जो आत्मा और परमाणु बंध का विज्ञान है। तथापि वैज्ञानिक चेतना Consciousness के अस्तित्व को स्वीकार करते हैं।

वैज्ञानिक यद्यपि शाश्वत जीव तत्व के अस्तित्व को अस्वीकार करते हैं तथापि 'स्पेस टाईम' क्षेत्र में वे चेतन तत्व को ढूंढ रहे हैं। वैज्ञानिक यह मानने को बाध्य हो गये हैं कि जिस क्वांटम फील्ड से पौद्गलिक पदार्थों की उत्पत्ति होती है, कदाचित वही चेतना काभी स्रोत हो।

वैज्ञानिक जानते हैं कि परमाणु का मूल स्वरूप Energy Wave है जो जीव अथवा Observer को पार्टिकल रूप में दिखाई देता है अर्थात् परमाणु का खण्ड रूप, जीव के अस्तित्व पर निर्भर है। यदि जीव नहीं होगा तो परमाणु पार्टिकल भी नहीं होगा। यदि परमाणु अनादि है तो जीव भी अनादि होगा। जैनदर्शन में द्रव्यों का निरूपण द्रव्यों के वेव नेचर और पार्टिकल नेचर दोनों स्वरूप में कियाजाता है। जो वर्तमान समय में क्वांटा फिजिक्स के विषय हैं।

जड़ (Mass) चेतन (Energy) परमाणु (Quanta) और अस्तिकाय (Quantum Field) आदि का जो कॉन्सेप्ट भगवान महावीर ने लगभग 2600 वर्ष पूर्व दिया था वो वर्तमान वैज्ञानिक कॉन्सेप्ट से भिनन नहीं हैं जिसका आदि मध्य और अन्त स्वयं वह परमाणु है जिसका अवगाहन क्षेत्रएक आकाश क्षेत्र अर्थात् एक आकाश प्रदेश है।

इस कथन के साथ भगवान महावीर के क्वाटम फिजिक्स के Wave Function and Uncertainty Principle का प्रतिपादन किया है। क्वांटम फिजिक्स का विकास अनेक वैज्ञानिकों द्वारा लगभग 100 वर्ष की अवधि में किया गया। वह कार्य भगवान महावीर ने अपने जीवन काल में ही समाप्त कर दियाइसलिए तो वे सर्वज्ञ कहलाये।[4]

भारतीय वाङ्मय में ऊर्जा का दृश्टिकोण

भारतीय प्राच्य विद्या अत्यन्त ही समृद्ध और व्यापक विषयों को समाहित करने वाली रही है। न केवल दर्शन, अपितु भूगोल, खगोल, ज्योतिष, वास्तु, अर्थशास्त्र, समाजशास्त्र, मनोविज्ञान, तर्कशास्त्र, ज्योतिषशास्त्र, गणित, विज्ञान आदि सभी कुछ भारतीय प्राच्य विद्याओं के अन्तर्गत समृद्ध अवस्था में विद्यमान रहा है। ऐसे में यह भी निश्चित रूप से कहा जा सकता है कि उस समृद्ध साहित्य में शायद ही ऐसा कोई विषय हो, जिसका वर्णन न मिलता हो। आज के विज्ञान में जो कुछ विकास हुआ है, उसकी नींव भी भारतीय दार्शनिक ग्रन्थ अथवा प्राच्य विद्याओं में ही है।

[4]वैज्ञानिक महावीर, एम बी मोदी, दि ब्रेविटि एजुकॉम प्रा0 लिमिटेड, दिल्ली, पृष्ठ–202

ऊर्जा का विषय हो या अन्य किसी शक्ति का, सभी का वर्णन भारतीय वाड्मय में अवश्य ही उपलब्ध होता है। हां इतना अवश्य है कि ऊर्जा शब्द का उल्लेख भारतीय दार्शनिकों ने नहीं किया है, किन्तु ऊर्जा अर्थात् शक्ति विषय बहुत से सिद्धान्तों का निरूपण किया है।

भारतीय दार्शनिकवाड्मय में ऊर्जा को एक शक्ति के रूप में माना है, जो अत्यन्त ही सूक्ष्म है और तीव्र गति से एक स्थान से दूसरे स्थान पर स्थानान्तरित की जा सकती है। भारतीय वाड्मय के इतिहास में सदा से यह कहा जाता रहा है कि किसी वृद्ध का आशीर्वाद लेना चाहिए, किसी का दिल नहीं दुखाना चाहिए, इससे बद्दुआ मिलती है, जो हमारी असफलता में एक कारण है। आधुनिक पढ़ा–लिखा व्यक्ति इन सब बातों को दकियानूसी या अंधविश्वास कह सकता है, लेकिन भारतीय प्राच्य विद्याओं की यह अनूठी विशेषता रही है कि वहऊर्जा को इसी रूप में प्रख्यापित करता है। यह आशीर्वाद ग्रहण करना भी एक ऊर्जा है, जो जीवन जीने की कला सिखाता है। उदाहरण के तौर पर भारतीय वाड्मय में दुआ और बद्दुआओं में भी अत्यधिक ऊर्जाकी स्थिति बताई गई है, जिसे आज के विज्ञान को स्वीकारना होगा। भारतीय वाड्मय में बद्दुआ/हाय के बारे में यह छन्द उपलब्ध होता है, जो यह कहता है कि हाय से सब कुछ भस्म हो सकता है–

दुर्बल को न सताइये, जाकी मोटी हाय।
मरे जीव के चामसों, लोह भस्म हो जाय।।

क्या यह 'हाय' एक नकारात्मक ऊर्जा नहीं है,जो सब कुछ भस्म कर सकती है, तो इसी आधार पर आशीर्वाद एक सकारात्मक ऊर्जा नहीं है जो सफलता का पाठ पढ़ा सकती है। वास्तव में दृष्टिकोण का अन्तर है, जो हमें भारतीय वाड्मय में ऊर्जा को खोजने में मदद करता है, ऊर्जा का नाम तो आचार्यों ने लिया नहीं है, लेकिन शक्ति के अनेक रूपों को इसी प्रकार समझाया गया है। यह तो एक दृष्टान्त है। आइये! इसी को थोड़ा और स्पष्ट करने की कोशिश करें। ''लोगों की दुआ आपके साथ होगी, तो ये दुआयें भी आपकी सफलता की राह में मील के पत्थर सिद्ध होंगी। भले आपको यह पता न चले कि उन दुआओं का आपकी सफलता में क्या योगदान है और किस प्रकार है? लेकिन वास्तव में ये अप्रत्यक्ष रूप से ही, जाने या अनजाने रूप से ही सही, लेकिन निश्चित ही सफलता के कारणों में से एक कारण हैं।

जिन बच्चों को अपने माता–पिता और गुरुजनों का आशीर्वाद मिलता है, उनकी तरक्की होते आपने अवश्य देखी होगी, हॉ, आप यह भी कह सकते हैं कि ऐसा जरूरी तो नहीं है। अब आप यह देखने की कोशिश करें कि माता–पिता और गुरुजनों के आशीर्वाद से पला–बढ़ा बच्चा जिस लायक था, क्या वह उससे ऊपर नहीं हुआ? विशेष सफल भले ही वह नहीं हुआ हो, किन्तु अपनी योग्यता या प्रयास की अपेक्षा अधिक सफल बन सका है, तो यह उसके माता–पिता और गुरुजनों के आशीर्वाद का प्रभाव नहीं तो और क्या है?

इसी प्रकार जो बच्चे माता–पिता और गुरुजनों का आशीर्वाद प्राप्त नहीं कर पाते हैं, वे कोशिश करके सफल दिखाई भी दे रहे होते हैं, लेकिन जितना प्रयास वे करते हैं और जितनी सफलता उनके हिस्से में आनी चाहिए थी, वहॉ तक वे नहीं पहुॅच पाते हैं। आज जो सफलता उन्होंने पाई है, वह आपको दिख रही है और उनकी

मेहनत दिखाई नहीं दे पा रही है, अतः यह आप कैसे अन्दाजा लगा पायेंगे कि उनके प्रयास के अनुरूप सफलता कम प्राप्त हुई है?

इन सब बातों से यह सहज सिद्ध है कि सफलता के कारणों में दुआ और बद्दुआ का बहुत बड़ा हाथ होता है, अतः यह प्रयास सदैव रखें कि हमारे किसी भी कार्य से किसी का दिल तो नहीं दुख रहा है और वह हमारे प्रति गलत धारणा रखता हो, बल्कि प्रयास इसका रखो कि ज्यादा से ज्यादा दुआएँ कैसे प्राप्त हों। किसी फकीर की झोली में जब आप कुछ पैसे डालें तो ये समझें कि इस महँगाई के जमाने में आज भी दुआएँ कितनी सस्ती हैं।''[5]

भले आप मानें या न मानें, लेकिन यह साइंटिफिक भी है। जब किसी के हृदय की गहराइयों से शुभाशीष मिलता है ता वाकई पत्थर में जान आ जाती है और जब हृदय की गहराइयों से बद्दुआ निकलती है तो पत्थर भी फूट जाते हैं। जिन्हें हम दिल से चाहते हैं उन तक हमारी दुआ बिना बोले ही हजारों किलोमीटर की दूरी तक भी पहुँच जाती है, इसके लिए 13 फरवरी 2001 के 'राष्ट्रीय सहारा', दिल्ली संस्करण में प्रकाशित एक घटना का यहाँ उल्लेख किया जा रहा है–

22 अगस्त सन् 1964 की एक घटना है। प्रसिद्ध फ्रांसीसी व्यापारी फ्रेड स्पेडलिंग अपनी कार से हैरी की ओर बढ़ रहे थे। हैरी वेस्टइंडीज द्वीप समूह के एक टापू पर स्थित छोटा सा शहर है। यह अटलांटिक महासागर के फैरोपियन द्वीप हिस्सानोलिया के पश्चिमी किनारे पर बसा हुआ है। उस शहर में स्पेडलिंग प्रायः व्यापार के सिलसिले में आया–जाया करते थे। जब वे हैरी की ओर बढ़ रहे थे कि रास्ते में अचानक तूफान आ गया। तूफान भी ऐसा कि पहले वैसा भयंकर तूफान उन्होंने कभी देखा नहीं था। उस तूफान में न जाने कितने व्यक्ति मारे गये थे और करोड़ों की संपत्ति नष्ट हो गयी थी। शहर ही तबाह हो गया था। स्पेडलिंग भी उस अंधड़ में फॅस गये, फिर भी उन्होंने होटल तक पहुँचने की कोशिश की, तभी उन्हें सुनाई दिया 'पीछे लौट जाओ। यह रास्ता खतरनाक है।' आवाज बहुत समीप से आयी थी। लगता था कोई कार की पिछली सीट पर बैठा था, स्पेडलिंग ने चौंक कर इधर–उधर देखा, कोई दिखाई नहीं दिया।

उन्होंने समझा कि उन्हें कोई भ्रम हुआ है। स्पेडलिंग ने अपनी यात्रा जारी रखी। कुछ दूर आगे बढ़े ही थे कि फिर वही आवाज सुनाई दी, वही शब्द थे, किंतु इस बार स्वर पहले की अपेक्षा ऊँचा था। स्पेडलिंग ने स्वर को पहचाना भी, वह आवाज उनकी पत्नी की आवाज से मिलती–जुलती थी। उस समय श्रीमती स्पेडलिंग तो हजारों मील दूर कनैक्टीकट (अमरीका) में थी, इसलिए स्पेडलिंग को उस आवाज पर भरोसा न हुआ और वे बराबर आगे बढ़ते रहे। रह–रह कर वह आवाज सुनाई देती, स्पेडलिंग चौंक जाते, सहम जाते और रुककर थोड़ी देर विचार करने लगते, परंतु फिर आगे बढ़ जाते। रुकते–रुकते वह कुछ घंटों में समुद्र तट के पास बह रही एक नदी के पुल तक पहुँचे। वह पुल पार करने जा ही रहे थे कि देखा अंधड़–तूफान में उफन रहे समुद्र ने अपनी एक तेज लहर के दबाव से नदी पर बना पुल तोड़ दिया। अचानक यह दृश्य देखकर स्पेडलिंग कॉप उठे, कुछ क्षण पहले ही यदि उन्होंने अपनी कार पुल पर बढ़ा दी होती तो निश्चय ही उनका तूफान में कहीं पता भी नहीं चलता।

[5]सफल होना वाकई सरल है, डॉ0 शुद्धात्मप्रकाश जैन, सर्वार्थसिद्धि प्रकाशन, जयपुर पृष्ठ– 2

इसे परिचित बोध (टेलीपैथी) कहें अथवा दूरदर्शन (क्लेयर वायर) परंतु पत्नी द्वारा संदेश इन दोनों का मिला–जुला रूप था। यह रहस्य ही रहा, जबकि स्पेडलिंग को अपनी पत्नी की आवाज और चेतावनी कहॉ से तथा कैसे सुनाई दे रही थी?

घर पहुॅचने पर तो इसमें रहस्य का एक और अध्याय जुड़ गया। स्पेडलिंग जब घर पहुंचे तो उन्होंने अपनी पत्नी से इस घटना की चर्चा की। उनकी पत्नी ने बताया कि ठीक उसी रात को उसने सपना देखा कि उसका पति हैरी के जंगल में भयानक तूफान में फॅस गया है। आगे गहरी नदी ह, उसमें उसकी मोटर डूबने ही वाली है। इस दृश्य से वह बुरी तरह घबरा गई थी और सोते ही चीख उठी, 'फ्रेड वापस लौट जाओ।'

वह अपने पति को इसी नाम से पुकारती थी। 'खतरे से बचो, आगे खतरा है।' यह एक रहस्य ही था कि हजारों मील दूरी पर रह रही श्रीमती फ्रेड का संकट के समय ऐसी अनुभूति कैसे हुई, जो न केवल भविष्य बताती थी, वरन् एक की स्थिति का दूसरे को तत्क्षण आभास भी देती थी। मनोविश्लेषकों के अनुसार पति–पत्नी, मॉ–बेटा, मित्र अथवा कई ऐसे रिश्ते होते हैं जो भावनात्मक स्तर पर इतने निकट हो जाते हैं कि एक के मन की बात दूसरा जान लेता है और इसी प्रकार उसके अपने मन में सोचे गये संदेश भी दूसरे तक पहुॅच जाते हैं। फ्रेड स्पेडलिंग के मामले में भी यही हुआ, पत्नी को पति के संकट में होने का आभास हुआ और उसके मन ने उसी समय संदेश भेजकर पति की जान बचा ली। बाद में ब्रिटेन की साइकी रिसर्च सोसायटी के अध्यक्ष मार्य की अध्यक्षता में इसे सही भी पाया गया।[6]

सही ही है दुनिया में सबसे तेज रफ्तार दुआओं की हैं, क्योंकि दिल से जुबान तक पहुॅचने से पहले ही ये रब तक पहुॅच जाती हैं।

ऊर्जा का दूसरा उदाहरण : श्रद्धा

जिसप्रकार दुआ को सकारात्मक ऊर्जा और बद्दुआ को नकारात्मक ऊर्जा के रूप में चित्रित किया गया है, उसी प्रकार श्रद्धा भी एक ऐसी ऊर्जा है, जिसमें तीव्र गुरुत्वाकर्षण शक्ति होती है और उस श्रद्धा के बल पर व्यक्ति अन्य व्यक्ति के गुणों को आकर्षित करके स्वयं में अर्जित कर सकता है। जिस व्यक्ति के गुण ग्रहण करना है, उसके प्रति तीव्र श्रद्धा रखनी होगी।

''जिसप्रकार दुआ और आशीष देने वाले की दुआ और आशीष हजारों किलोमीटर दूर तक दूसरे तक पहुॅचता है उसी प्रकार किसी के प्रति भरपूर श्रद्धा रखकर भी हजारों किलोमीटर दूर बैठे उस व्यक्ति के गुणों को प्राप्त करने में हम समर्थ हो सकते हैं। हो सकता है, यह बात आपको हजम न हो, लेकिन ये सब साइंटिफिक बातें हैं, ऐसा सच में हुआ भी है और पुराण एवं इतिहास इस बात के साक्षी हैं। एकलव्य ने धनुर्विद्या का ज्ञान बहुत दूर बैठे गुरु से केवल श्रद्धा के बल पर सीख कर दिखा दिया।

[6]'राष्ट्रीय सहारा',दैनिक समाचारपत्र, दिल्ली संस्करण, 13 फरवरी 2001

हो सकता है इस बात को आप यह कहकर नकार दें कि किसने देखा है यह सब? ये तो पुराणों की बातें हैं? आपकी यह शंका भी ठीक है, आप स्वयं किसी को अपना आदर्श बना लीजिये और उसमें इतना खो जाइये कि आप और वो अलग है, ऐसा भी आप भूल जायें या यूँ समझिये कि उनकी समस्या, उनके सुख–दुख अब से आपकी समस्या और आपके सुख–दुख हैं, भले ही कुछ अंशों में परिवर्तन दिखे, लेकिन थोड़े ही दिनों में आपको यह समझ में आने लगेगा।

उपर्युक्त सम्पूर्ण विवरण से यह स्पष्ट है कि दुआ और बद्दुआ का असर बहुत ही असरकारक होता है। हमारे प्रति किसी के विचार जिसप्रकार के होंगे, उनका हमारी सफलता में बहुत परोक्ष रूप से बहुत असर पड़ता है। इसके लिए एक दृष्टान्त दिया जा रहा है–

एक बार एक विदेशी व्यक्ति भारत आया और उसने यहॉ के किसी संत से पूछा कि ''महाराज! मैंने सुना है कि भारत के लोगों की औसत आयु हमारे देशों से अधिक है। ऐसा क्यों?'' महाराज उसकी शंका को समझ गये थे, अतः बोले– ''यह जो सामने का पेड़ देख रहे हो न, इसे सूखने तक आपको यहॉ रुकना पड़ेगा। तब आपको इस प्रश्न का उत्तर मिल सकेगा।''

उस व्यक्ति को प्रश्न का उत्तर जल्दी से जल्दी प्राप्त करके अपने देश को लौटना था, अतः वह व्यक्ति उस वृक्ष के बारे में रोज यही सोचता कि कब यह वृक्ष सूखे। जल्दी ही वह दिन भी आ गया, जब वह वृक्ष पास ही खड़े पुराने वृक्षों से पहले ही सूख गया।

परदेशी ने जब संत का ध्यान इस ओर आकर्षित किया तब संत ने उससे पूछा कि ''सच बताना इतने दिनों से आपके मन में क्या चल रहा था?''

परदेशी ने कहा– ''महाराज! मैं तो बस यही सोचता रहा कि कब यह वृक्ष सूखे और कब मुझे अपने प्रश्न का उत्तर मिले, जिससे मैं अपने देश जा सकूँ।''

संत ने उसे समझाते हुए कहा कि ''देखो! तुम्हारे रोज–रोज उस वृक्ष के बारे में बुरी भावना भाने से वह वृक्ष दूसरे वृक्षों से पहले ही सूख गया, यही बात तुम्हारे देश में लागू होती है। वहॉ पर नई पीढ़ी की यह भाव–धारा चलती है कि कब बुजुर्ग चल बसे, जिससे मुझे पैतृक सत्ता का सुख प्राप्त हो सके, जबकि भारत में ऐसी भावधारा नहीं चलती।''

यही कारण है कि जैसी भावधारा, वैसी ही जीवनधारा।

अतः किसी की भावधारा अपने प्रति खराब करने का उसे मौका भी मत दो। आप इस बात के लिए विशेष रूप से सावधान बने रहें कि आपकी कोई गतिविधि ऐसी न हो कि जिसके कारण दूसरा कोई आपके प्रति नकारात्मक भाव भाना शुरू कर दे। आपके विचार ऐसे व्यक्ति से न मिले तो आप उससे बातें मत करो, या ऐसे विचारों पर चर्चा मत करो या दूर बने रहो, लेकिन सम्बन्ध इस तरह खराब न करो कि उसकी भावधारा आपके प्रति खराब हो

जाये। भूल से भी, नींद में भी, अनायास रूप से भी या किसी अन्य उद्देश्य से भी किसी दूसरे की बद्दुआ से बचो, किसी की भावधारा आपके प्रति उल्टी न हो जाये।''[7]

वैचारिक प्रकल्पनाओं में ऊर्जा का उत्पादन

भारतीय दर्शनों में ऊर्जा को खोजने से पहले भारतीय वाड्मय का दृष्टिकोण अवश्य पहचानना होगा, वहां केवल बाहरी भौतिकी एवं रासायनिकी ऊर्जा की चर्चा न करके अत्यन्त सूक्ष्म स्तर की ऊर्जा के बारे में निर्देश दिये गये हैं। बहुत सी ऊर्जा ऐसी हैं, जिन तक अभी विज्ञान भी नहीं पहुंच पाया है, लेकिन विज्ञान भी उस ओर गमन कर रहा है, जैसा कि यह उदाहरण देखें–

अमेरिका मे जब एक कैदी को फॉसी की सजा सुनाई गई तो वहॉ के कुछ वैज्ञानिकों ने सोचा कि क्यों न इस कैदी पर कुछ प्रयोग किया जाय। तब कैदी को बताया गया कि हम तुम्हें फॉसी देकर नहीं, परन्तु जहरीला कोबरा सॉप डसाकर मारेगेंऔर उसके सामने बड़ा सा जहरीला सॉप ले आने के बाद कैदी की ऑखे बंद करके कुर्सी से बॉधा गया और उसको सॉप नहीं बल्कि दो सेफ्टी पिन्स चुभाई गई। ऐसा करने से कैदी की कुछ सेकेन्ड मे ही मत्यु हो गई,पोस्टमार्डम के बाद पाया गया कि कैदी के शरीर मे सॉप के जहर के समान ही जहर है ।प्रश्न उत्पन्न होता है कि अब ये जहर कहॉ से आया जिसने उस कैदी की जान ले ली? वो जहर उसके खुद शरीर ने ही सदमे म उत्पन्न किया था। निश्चित ही कहा जा सकता है कि हमारे हर संकल्प से पाजिटीव एवं निगेटीव एनर्जी उत्पन्न होती है और वो हमारे शरीर मे उस अनुसार hormones उत्पन्न करती है।हमारी 75 प्रतिशत बोमारियों का मूल कारण नकारात्मक सोच से उत्पन्न ऊर्जा ही है। आज इंसान ही अपनी गलत साच से भस्मासुर बन खुद का विनाश कर रहा है।

भारतीय दर्शनों में ऊर्जा का सामान्य स्वरूप

भारतीय वाड्मय में ऊर्जा के स्वरूप का एक सामान्य चित्रण किया जाये तो उसके निम्न विभाग हो सकेंगे, जिन्हें इसप्रकार प्रस्तुत किया जा सकता है–

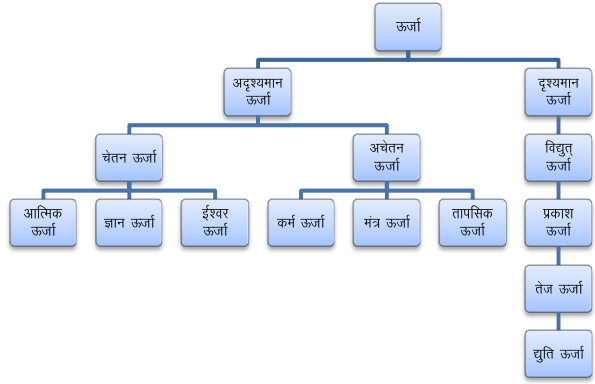

[7]सफल होना वाकई सरल है, डॉ0 शुद्धात्मप्रकाश जैन, सर्वार्थसिद्धि प्रकाशन, जयपुर पृष्ठ– 6

Vol. 5, Issue: 7, July : 2017
ISSN:(P) 2347-5404 ISSN:(O)2320 771X

दृश्यमान और अदृश्यमान ऊर्जा

भारतीय दर्शनों में ऊर्जा के सामान्य स्वरूप को देखने पर यह निष्कर्ष निकलता है कि ऊर्जा के सामान्यतः दो प्रकार हैं– दृश्यमान ऊर्जा और अदृश्यमान ऊर्जा। जो चर्म चक्षुओं या सूक्ष्मदर्शक यंत्र से दिखाई देती है, वह दृश्यमान ऊर्जा है और जो अनुभवगम्य है, वह अदृश्यमान ऊर्जा है, यथा आत्मिक ऊर्जा और ज्ञानगुण की ऊर्जा आदि। पुनः अदृश्यमान ऊर्जा के दो भेद किये जा सकते हैं– चेतन ऊर्जा और अचेतन ऊर्जा। जो चेतन तत्व ध्रुव, अखण्ड और ज्ञानसम्पन्न आत्मा अन्तर में विराजमान है, उसमें जो ऊर्जा है, उसकी ओर आज के विज्ञान का कोई ध्यान नहीं है, जबकि वही असली ऊर्जा है जो अन्य अनेक भौतिक आदि ऊर्जाओं की खोज करता है।

एक वैज्ञानिक अनुसंधान करता है, लेकिन अनुसंधान करने की शक्ति की ओर उसका ध्यान नही है। भारतीय दर्शन कहते हैं कि खोज करने वाला आत्मा स्वयं की खोज नहीं करता है– यह अत्यन्त आश्चर्य का विषय है। यदि आत्मा में ऐसी जानने रूप ऊर्जा न हो तो वह किसे जान और क्यों जाने? आज जितना जो वैज्ञानिक विकास दिखाई दे रहाहै, वह उसी आत्मिक ऊर्जा और उसके ज्ञानगुण की ऊर्जा के कारण ही दिखाई दे रहा है। अनुसंधान के प्रति सभी का आकर्षण है, किन्तु अनुसंधान करने की शक्ति वाला आत्मा के प्रति किसी का ध्यान नहीं है।